वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 394
ISBN 978-93-82071-80-8

श्री शांतिनाथ समवसरण विधान

–रचयित्री –

दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत,
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि, दिव्य शक्ति
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा-18 अक्टूबर 2013, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 62वें त्यागदिवस एवं 80वें जन्मदिवस-अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आश्विन शु. पूर्णिमा, 18 अक्टूबर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

- कम्पोजिंग -
ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

''देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ तीन रतन करतार'' देव, शास्त्र और गुरु ये तीन रत्न के समान हैं, जिनकी भक्ति करने से क्रमशः सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होती है। इन तीनों की प्राप्ति से ही मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है जैसा कि तत्त्वार्थसूत्र में आचार्यश्री उमास्वामी ने कहा है ''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः'' अर्थात् इन तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए आगम में दो मार्ग बताए हैं-भक्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग, जिसमें भगवान की भक्ति करने के विभिन्न माध्यमों में से एक है पूजन विधान आदि करके कर्मों की निर्जरा कर पुण्य का संचय करना।

बीसवीं सदी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम ग्रंथ रचना कर लगभग 300 ग्रंथों का लेखन कार्य किया, जिनमें अनेक पूजन-विधानों की भी रचना की। माताजी द्वारा रचित अनेकों छोटे-बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं। उसी श्रृँखला में एक नई कृति ''श्री शांतिनाथ समवसरण विधान'' आपके समक्ष ''वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला'' द्वारा प्रकाशित करके पहुँचायी जा रही है, जिसके माध्यम से आप पूजन करके धर्मलाभ प्राप्त करें तथा यह विधान आपके सम्यक्त्व को दृढ़ करने में सदा सहकारी बने और एक दिन साक्षात् उस समवसरण की विभूति का दर्शन करके मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–आर्यिका चन्दनामती

प्रिय पाठकों! आपके हाथों में है–''श्री शांतिनाथ समवसरण विधान'' नाम की पुस्तक। अतः इसके संबंध में आपको जानना है-

हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर आज से लाखों वर्ष पूर्व 16वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ ने जन्म लिया और वे तीर्थंकर-चक्रवर्ती-कामदेव पद से समन्वित थे।

उन्होंने छह खण्ड के साम्राज्य का संचालन करके चक्रवर्ती के वैभव का सांसारिक सुख भोगा, 96 हजार रानियों के साथ भौतिक सुख प्राप्त किया पुनः एक दिन दर्पण में अपने दो मुख देखकर संसार से विरक्त हो गये और देवों द्वारा लाई गई पालकी में बैठकर हस्तिनापुर के सहस्राम्र वन में जाकर ''सिद्धं नमः'' के उच्चारणपूर्वक जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। उसके पश्चात् जब उन्हें दिव्य केवलज्ञान प्राप्त हो गया तब धनपति कुबेर ने क्षणमात्र में धरती से 20 हजार हाथ ऊपर आकाश में अधर समवसरण की रचना निर्मित कर दी, जिसमें असंख्यों भव्य प्राणी बैठकर भगवान की दिव्यध्वनि का पान करने लगे।

यहाँ संक्षेप में उस समवसरण का वर्णन देखिए-

समवसरण के नाम से प्रायः सभी भक्त श्रावक परिचित हैं। जब तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर अर्धनिमिष मात्र में समवसरण की रचना कर देता है। यह रचना पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में निर्मित होती है। जहाँ मनुष्य 20 हजार सीढ़ियों को पार कर पहुँचता है। एक सीढ़ी 1 हाथ की होती है। यह रचना थाली के समान गोलाकार इन्द्रनीलमणि की शिला पर बनती है। इस शिला पर 8 भूमियाँ, 4 कोट और 5 वेदियाँ होती हैं। इसके ठीक मध्य में श्रीमंडप भूमि के आगे तीन कटनियाँ होती हैं। पहली कटनी पर चारों दिशाओं में सर्वाण्हयक्ष धर्मचक्र को लिये होते हैं। दूसरी कटनी पर 8 महाध्वजाएँ होती हैं तथा अंतिम कटनी पर गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु कमलासन पर अधर विराजमान रहते हैं। जिसके ऊपर अशोकवृक्ष लगा रहता है। भगवान के पीछे भामंडल होता है, जिसमें भव्य प्राणी अपने आगे-पीछे के कुल 7 भव देख लेते हैं। भगवान के मस्तक पर तीन छत्र, आजू-बाजू चौंसठ चंवर आदि 8 प्रातिहार्य होते हैं।

समवसरण में क्रम से 8 भूमियाँ इस प्रकार हैं–1. चैत्य प्रासाद भूमि 2. खातिकाभूमि 3. लता भूमि 4. उपवन भूमि 5. ध्वजाभूमि 6. कल्पभूमि 7. भवनभूमि और 8. श्रीमंडपभूमि।

अंतिम श्रीमंडपभूमि में ही 12 सभाएँ लगती हैं, जिनमें भव्यजीव बैठकर भगवान की दिव्यध्वनि सुनकर धर्मोपदेश ग्रहण करते हैं। इन कोठों में बैठने का क्रम इस प्रकार है–

1. पहले कोठे में गणधर आदि मुनिगण 2. कल्पवासिनी देवियाँ 3. आर्यिकाएँ और श्राविकाएँ 4. ज्योतिषी देवियाँ 5. व्यंतर देवियाँ 6. भवनवासी देवियाँ 7. भवनवासी देव 8. व्यंतर देव 9. ज्योतिषी देव 10. कल्पवासी देव 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य 12. तिर्यंच पशु-पक्षी आदि बैठते हैं।

समवसरण में सबसे बाहर धूलिसाल कोट होता है, जो पंचवर्णी रत्नों से चमकता हुआ गोल होता है। यह तीर्थंकर की ऊँचाई से चौगुना ऊँचा होता है। इसके 4 गोपुर द्वार होते हैं-विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित।

भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यंत 24 तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार अलग-अलग है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का समवसरण 12 योजन अर्थात् 96 मील का था, जो आगे-आगे घटते क्रम में भगवान महावीर का 1 योजन अर्थात् 8 मील का रह गया था। प्रत्येक समवसरण में मानस्तंभों की ऊँचाई भगवान की ऊँचाई से 12 गुनी ऊँची होती है। इस मानस्तंभ का दर्शन करते ही मानी का मान गलित हो जाता है। सम्यग्दृष्टि भव्यजीव ही प्रभु के समवसरण में प्रवेश कर सकते हैं। मिथ्यादृष्टि नहीं जा सकते। समवसरण की यह विशेषता होती है कि अंधे, लूले, लंगडे सभी क्रम से 20 हजार सीढ़ी पार कर ऊपर पहुँच जाते हैं और पूर्ण निरोगी हो जाते हैं। तीनों लोकों में समवसरण के समान बहिरंग लक्ष्मी युत वैभव और कहीं नहीं होता है। यह सब तीर्थंकर प्रकृति के पुण्य का ही प्रभाव है।

तिलोयपण्णत्ति महाग्रंथ में विस्तार से समवसरण का वर्णन है, जिसका स्वाध्याय कर इसके बारे में जानना चाहिए।

प्रभु भक्ति से सभी मनोरथ सफल होते हैं–पूज्य माताजी ने अनेक विधानों की रचना की, जिनके माध्यम से भगवान की भक्ति करके सभी अपने मनोवांछित फल की प्राप्ति करते हैं। उसी श्रृंखला में पूज्य माताजी ने इस ''श्री शांतिनाथ समवसरण विधान'' की रचना की है। इस विधान में विभिन्न रंगों की

रंगोली से समवसरण का मण्डल बनाना चाहिए। मध्य में तीन कटनी से युक्त सुंदर गंधकुटी रखकर उसमें चारों दिशाओं में भगवान शांतिनाथ की चार प्रतिमाएँ विराजमान करनी चाहिए। जो चतुर्मुखी प्रतिमा का प्रतीक होती हैं। क्योंकि जब तीर्थंकर भगवान साक्षात् समवसरण में विराजमान होते हैं, तो उनका मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होता है किन्तु केवलज्ञान के अतिशय से 12 सभाओं में बैठे सभी जीवों को भगवान का मुख अपनी ओर दिखता है।

इस ''श्री शांतिनाथ समवसरण विधान'' को आप केवल 1 दिन में सम्पन्न करके साक्षात् समवसरण के दर्शन-वंदन का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित सुन्दर-सुन्दर छंदों में निबद्ध 108 अर्घ्यों के माध्यम से तीर्थंकर प्रभु के गुणों से भक्तों को परिचित कराने का यह अलौकिक प्रयास है।

इसमें सर्वप्रथम मंगल स्तोत्र पाठ है, पुनः शांतिनाथ भगवान की पूजा प्रारंभ कर मानस्तंभ के 4 अर्घ्य, आठ भूमियों के 17 अर्घ्य, धर्मचक्र के 4 अर्घ्य, द्वितीय कटनी पर स्थित आठ महाध्वजा का एक अर्घ्य एवं गंधकुटी का 1 अर्घ्य है पुनश्च समवसरण का वर्णन करती सुन्दर जयमाला है। श्री शांतिनाथ गुण पूजा में जन्म के दस अतिशय, केवलज्ञान के 10 अतिशय, देवकृत 14 अतिशय, 8 प्रातिहार्य के 8 और 4 अनंत चतुष्टय के 4 इस प्रकार 46 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य है, पुनः 18 दोष रहित के 18 अतिशय के 18 अर्घ्य, गणधर देव का 1 अर्घ्य, समवसरण के मुनियों के 7 अर्घ्य, समवसरण स्थित आर्यिकाओं का एक अर्घ्य, शासन देव-देवी का 1-1 अर्घ्य तथा भगवान के 108 गुणों के 108 एवं 1 पूर्णार्घ्य है। इस प्रकार कुल 210 अर्घ्य और 2 पूर्णार्घ्य हैं। कुल 3 जयमाला हैं, जिसके अंदर समवसरण का अत्यन्त सजीव वर्णन है।

पूज्य माताजी की इस कृति से आप सभी खूब भक्ति का रसास्वादन प्राप्त करें, यही मंगल भावना है एवं पूज्य गुरुमाता गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन।

दो शब्द

–आर्यिका सुदृढ़मती (संघस्थ)

वर्तमान चौबीसी के सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ ने हस्तिनापुर नगर के राजा विश्वसेन की महारानी ऐरादेवी की पवित्र कुक्षि से ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को जन्म लिया। भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव इन तीन पदवियों से सुशोभित थे। वर्तमान में जम्बूद्वीप रचना के कारण विश्वप्रसिद्ध इसी पवित्र हस्तिनापुरी में भगवान के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान ऐसे चार कल्याणक हुए और सम्मेदशिखर शाश्वत निर्वाणभूमि से उन्होंने मोक्षधाम को प्राप्त किया।

इसी धरा पर जब भगवान को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, तब इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने अर्धनिमिष मात्र में दिव्य समवसरण की रचना की थी। इस समवसरण में चार परकोटे, पाँच वेदियाँ, इनके बीच में आठ भूमियाँ होती हैं, इनके ऊपर तीन कटनी होती हैं। तृतीय कटनी पर गंधकुटी के मध्य अधर जिनेन्द्र भगवान विराजमान रहते हैं। तीर्थंकरों के पुण्य का माहात्म्य ही ऐसा है कि केवलज्ञान होते ही वे पृथ्वी से पाँच हजार धनुष ऊपर आकाश में अधर पहुँच जाते हैं। समवसरण की यह रचना इन्द्रनीलमणि की शिला पर होती है, इसका विस्तृत वर्णन हमें तिलोयपण्णत्ति नामक महाग्रंथ से प्राप्त हो सकता है।

आज पंचमकाल में न तो तीर्थंकर भगवान इस भरतक्षेत्र में हैं और न ही उनके समवसरण ही विद्यमान हैं किन्तु उन तीर्थंकरों के लघु नन्दन साधु परमेष्ठी हमारे पुण्य प्रताप से आज भी हमें प्राप्त हो रहे हैं, जिनके दर्शन और उनके द्वारा प्रदत्त जिनवाणी के माध्यम से हम तीर्थंकर भगवान एवं उनके दिव्य समवसरण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी सचमुच ही गौरवशाली है, जब हमें साक्षात् सरस्वती स्वरूपा, परमपूज्या गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसी अमूल्य विभूति की प्राप्ति हुई, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया।

ग्रंथ लेखन की श्रृँखला में भी पूज्य माताजी ने अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है, जैनागम के प्रत्येक विषय पर उच्चकोटि के ग्रंथों का लेखन कर पूज्य माताजी ने पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित पीढ़ी को जिनधर्म की ओर अग्रसर करने में अपना अतुलनीय योगदान दिया है। भक्ति विधान के क्षेत्र में उन्होंने

अनेक वृहत् एवं लघु विधानों की रचना कर भक्ति की गंगा में अवगाहन करने का सुन्दर माध्यम भव्यात्माओं को प्रदान किया है, जिसकी अनुगूंज आज भारत के कोने-कोने में है। उसी क्रम में माताजी द्वारा रचित यह नूतन कृति ''श्री शांतिनाथ समवसरण विधान'' है, जिसमें भगवान शांतिनाथ के दिव्य समवसरण का विस्तृत वर्णन है।

इसके माध्यम से भव्यात्मा जीव भगवान शांतिनाथ के समवसरण के बारे में बिना किसी ग्रंथ को पढ़े ही भक्ति के माध्यम से पुण्य संचय के साथ-साथ पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और जिनेन्द्र भक्ति के माध्यम से अपनी कर्मश्रृँखला को नष्ट करते हुए एक दिन साक्षात् समवसरण की प्राप्ति की भावना कर सकते हैं। यह विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के लिए मंगलकारी हो, यही जिनेन्द्र देव से मंगल प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीरजी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्यश्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism.com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर ''आचार्य श्री शांतिसागर धाम'' का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तरखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**

6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
10. **श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**
11. **स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।**
12. **श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।**
13. **श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।**
14. **श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।**
15. **श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।**
16. **श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।**
17. **श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली**
18. **श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली**

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।

20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लाकदेहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली,चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना,रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।

53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, नौ विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।

86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेन्द्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन "विमल" ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

मण्डल का नक्शा

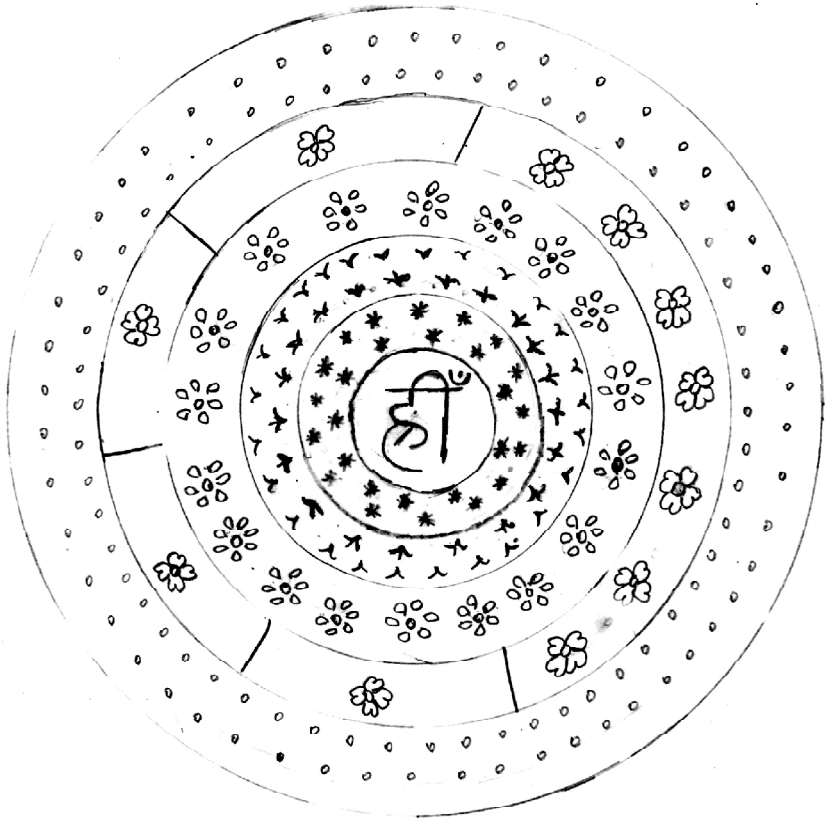

प्रथम कोष्ठक में	—२७ अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में	—४६ अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में	—१८ अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में	—१+७+१+१+१=११ अर्घ्य
पंचम कोष्ठक में	—१०८ अर्घ्य
कुल	**—२१० अर्घ्य**

श्री शांतिनाथ समवसरण विधान

मंगल स्तोत्र

बसंततिलका छंद (14 अक्षरी)-

श्री विश्वसेननृपजो भुवि शांतिकारी।
शांत्यैषिणां वितनुते किल पूर्णशांतिं।।
ऐरावती सुतवती भुवनैकमाता।
देवैर्नुता जगति मंगलमातनोतु।।1।।

या सप्तमीतिथिरभूदसिते नभस्ये[1]।
गर्भागमो जगति मंगलकृच्च तस्यां।।
ज्येष्ठेऽसिते तिथिरभूत् सुचतुर्दशी सा।
तस्यां जनिश्च जिनलिंगधरोऽपि भगवान्।।2।।

पौषे सिते सकलबोधरविः दशम्यां।
धर्मामृतैर्भविजनानभिषिक्तवान् यः।।
दीक्षातिथौ शिवरमां परिपूर्णसौख्यां।
सम्मेदशैलशिखरे स्वयमाप्नुतेऽसौ।।3।।

असंबाधा छंद (14 अक्षरी)-

शांतिः शं कुर्यात्, त्रिभुवनजनतायै वै।
वाणी ते पुष्यात्, कलिमलहरिणी भव्यान्।।

1. भाद्रपदे। ''स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः'' इत्यमरकोषे। नभस्ये-भाद्रपदे उत्तरपुराणे।

लोकांतं व्याप्तं तव धवलयशः स्वामिन्।
शांतीशः कुर्यात् मम मनसि सदा शांतिं।।4।।

अपराजिता छंद (14 अक्षरी)-

निजसुखसदनं, विभो! तव शासनं।
भवभयमथनं, च ते चरणाम्बुजं।।
शिवसुखजननं, जिनेन्द्रमुखाम्बुजं।
निरुपमसुखदा, प्रभो! तव वाक्सुधा।।5।।

प्रहरणकलिका छंद (14 अक्षरी)-

समसुखजननं, जनिमृतिहननं।
कलिमलविलयं, शिवसुखनिलयं।।
विकसितवदनं, कुवलयनयनं।
जिनवरचरणं, मम सुखफलदं।।6।।

अनुष्टुप् छंद-

चत्वारिंशद्धनुर्देहः, आयुर्लक्षैकवर्षभृत्।
कनकच्छविचक्रीशः, प्रद्युम्नश्रियमाप्तवान्।।7।।
चतुःकल्याणपूजाभिः, पूजितो हस्तिनापुरे।
षोडश तीर्थकृत् चक्री, पंचमो मृगलाञ्छनः।।8।।

अलोला छंद (14 अक्षरी)-

सर्वग्रन्थिविदूरोऽनंतानंतगुणाब्धिः।
लोकालोकविलोकी, ज्योतीरूपसुबोधः।।
भव्याह्लादकचंद्रः, सर्वानंदकरो यः।
शांतिं ज्ञानमतिं मे, कुर्यात् शांतिजिनेशः।।9।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं.-1

श्री शांतिनाथ समवसरण विधान पूजा

अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद

श्री शांतिनाथ का समवसरण, सुन्दर मणिरत्नों का।
सौ इन्द्रों से वंदित प्रभुवर, उन भक्ती भवनौका।।
ऐसे प्रभु का आह्वानन कर, अतिशय शांती पाऊँ।
जन्म मरण के दुःख से छूटूँ, जिनगुणसंपद् पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्तिद्वादशकामदेवपदसमन्वित श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्तिद्वादशकामदेवपदसमन्वित श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्तिद्वादशकामदेवपदसमन्वित श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद)

नंदा वापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊँ।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।2।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतम पद पाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।3।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की लताभूमि से, सुरभित पुष्प चुनाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।4।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुख व्याधि नशाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।5।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृप दीपक में ज्योति जलाकर, करुँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्यगुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।6।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वितश्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरु तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म को दग्ध करूँ मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।

समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।7।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।8।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीन रत्न निज पाऊँ।।
समवसरण का अतिशय वैभव, त्रिभुवन जन मनहारी।
अंतरंग आनन्त्य गुणों को, पूजूँ शिवसुखकारी।।9।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित श्री शांतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
आत्यंतिक शांति मिले, प्रगटे सौख्य अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल श्वेत पीतादि बहु, सुरभित पुष्प गुलाब।
पुष्पाँजलि से पूजते, हो निजात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

शांतिनाथ के पदकमल, वंदूँ मन वच काय।
सर्व सौख्य संपति मिले, जो अनंत अतिशायि।।1।।

मानस्तंभ के 4 अर्घ्य

।। अथ समवसरणे मानस्तंभेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–शंभु छंद–

श्री शांतिनाथ का समवसरण, भक्तों की भव भव दाह हरे।
जिननाम मंत्र भी भव्यों को, आत्यंतिक शांति प्रदान करे।।
जो समवसरण की भक्ति करें, उनकी सब बाधायें टलतीं।
पूरब दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण का ही प्रभाव, सौ-सौ योजन दुर्भिक्ष टले।
सब ईति भीति मारी संकट, नहिं होवे जहँ जिनराज चलें।।
सब ऋतु के भी फल फूल फलें, असमय में भी कलियखिलतीं।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतु-र्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मारग से हो श्रीविहार, वहाँ बहुत दिनों तक शांति रहे।
नहिं कष्ट उपद्रव दुर्घटना, सब रोग शोक दुख शांत रहे।।
सब क्रूर मनुजगण पशुगण के, भी आपस में मैत्री बनती।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतु-र्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन संनिध में सौधर्म इन्द्र, किंकर बन जिनआज्ञा पाले।
जहँ जहँ प्रभु का हो श्रीविहार, वह शीघ्र व्यवस्था कर डाले।।
इससे वह इक ही भव धरता, जिनभक्ती है अमोघ शक्ती।
उत्तर दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिनपूजा मनवांछित फलती।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे प्रथमभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–दोहा–

शांतिनाथ जिनराज का, समवसरण अतिशायि।
प्रथम भूमि जिनगेह को, जजूँ सर्व सुखदायि।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे द्वितीयभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–सखी छंद–

जिन शांतिनाथ भगवंता, सब जग में शांति करंता।
पूजूँ जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।6।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितश्रीशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे तृतीयभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–चाल-नंदीश्वर पूजा–

चउविध संघ में हो शांति, सब जग में होवे।
हो मुझ मन में भी शांति, तुम पद नित सेवें।।
बल्लीवन सुरभित पुष्प, वापी पर्वतयुत।
इस विभव सहित जिन ईश, पूजूँ त्रिकरणयुत।।7।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितश्रीशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे चतुर्थभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–चौबोल छंद–

शांतिनाथ के समवसरण में, इन्द्रराज भी भक्त बने।
भक्त पूर्ण शांती को पाकर, जन्म मृत्यु का कष्ट हनें।।
पूरब दिश अशोक तरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में सुरललनायें, भक्तिभाव से नृत्य करें।
धवल चंद्रकिरणों सम उज्ज्वल, प्रभु की गुण कीर्ती उचरें।।
दक्षिण दिश सप्तच्छद उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में शारीरिक, मानस आगंतुक कष्ट नहीं।
षट्ऋतु के फल फूल वहाँ, इक साथ फलें फूलें नित ही।।
पश्चिम दिश में चंपक तरु वन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में जिनप्रभाव से, वैर कलह संघर्ष नहीं।
सिंह हिरण अरु सर्प नेवला प्रेम परस्पर करें सही।।
उत्तर दिश उद्यान आम्र का, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।11।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे पंचमीभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–स्रग्विणी छंद–

शांति प्रभु की सदा जो करें अर्चना।
वे करें क्रोध मानादि की वंचना।।
पाँचवीं ध्वज धरा शोभती है वहाँ।
मैं जजूँ जिन समोसर्ण को नित यहाँ।।12।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितश्रीशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे षष्ठभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–भुजंगप्रयात छंद–

प्रभो शांति ईश्वर जगत् शांति कर्ता।
नमेरू तरू को नमूँ सौख्य भर्ता।।
पुनर्जन्म नाशो जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।13।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी चित्त पंकज खिलाते रवी हो।
महाशांतिदाता विधाता शशी हो।।
सुमंदार तरु के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।14।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदार सिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समोसर्ण शांतीश का सौख्यकारी।
वहाँ कल्पभूमी फलें इष्ट भारी।।
सुसंतानकांघ्रिप जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।15।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानक सिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावृक्ष है पारिजाताख्य उसमें।
चतुर्दिक्क सुरपूज्य प्रतिमा उसी में।।
गणीश्वर नमें मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजात सिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे सप्तमीभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–स्रग्विणी छंद–

शांति तीर्थेश चक्रीश कामेश हैं।
शांति के हेतु हम नाथ को पूज हैं।।
स्तूप के बिम्ब को पूजते शोक ना।
इष्ट वियोग आनिष्ट संयोग ना।।17।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ शांतीश का जो समोसर्ण है।
वो भवांभोधि तारण तरण एक है।।
स्तूप के बिम्ब को पूजते शोक ना।
इष्ट वियोग आनिष्ट संयोग ना।।18।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप पे छत्र फिरते चंवर ढुर रहे।
तोरणों पुष्पहारों से शोभित रहें।।
स्तूप के बिम्ब को पूजते शोक ना।
इष्ट वियोग आनिष्ट संयोग ना।।19।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप के बिंब को नित्य मुनि वंदते।
जो नमें वे महामोह को खंडते।।
स्तूप के बिम्ब को पूजते शोक ना।
इष्ट वियोग आनिष्ट संयोग ना।।20।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे अष्टमीभूमौ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–शंभु छंद–

श्री शांतिनाथ का समवसरण, साढ़े चउ योजन मुनि कहते।
जग शांतिविधाता शांतिनाथ, सब उनकी एक शरण गहते।।
जो पूर्ण शांति के इच्छुक हैं, वे शांतिनाथ को भजते हैं।
जो पूजें अर्घ चढ़ाकर वे, परमानंदामृत चखते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडित श्रीशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे धर्मचक्रोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–बसंततिलका छंद–

श्री शांतिनाथ जिनके सु समोसरण में।
भक्ती धरें परम शांत बने क्षणों में।।
श्री धर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।22।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आपके चरण पंकज में नमें हैं।
वे सर्व वैर कलहादि स्वयं वमें हैं।।
श्री धर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।23।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पूर्ण शांति मन में इस हेतु वंदूं।
संपूर्ण ज्ञान सुख से निज आत्म मंडूं ।।
श्री धर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।24।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ तिहुं लोक सुशांतिदाता।
तुम नाम मंत्र जपते मिटती असाता।।
श्री धर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।25।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे द्वितीयकटनीउपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–स्रग्विणी छंद–

शांति तीर्थेश के पाद पंकेज को।
जो जजें वो लहें शांति पीयूष को।।
पूजहूँ मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।
सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।26।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अथ समवसरणे गंधकुट्यां पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–गीता छंद–

श्रीशांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिये, फिर हो कभी वांछा नहीं।।
वर ज्ञान आदिक क्षायिकी, मिल जाय केवल लब्धियाँ।
जिन गंधकुटि को पूजहूँ, मिल जाय आतम सिद्धियाँ।।27।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिसहिताय श्री शांतिनाथाय नमः।**

(108 बार या 27 बार पुष्प या पीले चावल से जाप्य करें)

जयमाला

–सोरठा–

जिनवर शांतीनाथ, अनंतगुण के तुम धनी।
नमूँ नमाकर माथ, गाऊँ गुणमणिमालिका।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, गणधर मुनिगण वंदे।
जय जय समवसरण परमेश्वर, वंदत मन आनंदे।।
प्रभु तुम समवसरण अतिशायी, धनपति रचना करते।
बीस हजार सीढ़ियों ऊपर, शिला नीलमणि धरते।।2।।

धूलिसाल परकोटा सुंदर, पंचवर्ण रत्नों के।
मानस्तंभ चार दिश सुंदर, अतिशय ऊँचे चमकें।।
उनके चारों दिशी बावड़ी, जल अति स्वच्छ भरा है।
आसपास के कुंड नीर में, पग धोती जनता है।।3।।

प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि में, जिनगृह अतिशय ऊँचे।
खाई लताभूमि उपवन में, पुष्प खिलें अति नीके।।
वनभूमी के चारों दिश में, चैत्यवृक्ष में प्रतिमा।
कल्पभूमि सिद्धार्थ वृक्ष को, नमूँ नमूँ अति महिमा।।4।।

ध्वजाभूमि की उच्च ध्वजाएँ, लहर लहर लहरायें।
भवनभूमि के जिनबिम्बों को, हम नित शीश झुकायें।।
श्रीमंडप में बारह कोठे, मुनिगण सुरनर बैठे।
पशुगण भी उपदेश श्रवण कर, शांतचित्त वहाँ बैठे।।5।।

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु मानें।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़कर, मेरे भवदुःख हानें।।6।।

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
आप अलौकिक कल्पवृक्ष प्रभु, मुंहमांगा फल देते।
आप भक्त चक्री सुरपति, तीर्थंकर पद पा लेते।।7।।

जो तुम चरण सरोरुह पूजें, जग में पूजा पावें।
जो जन तुमको चित में ध्याते, सब जन उनको ध्यावें।।

जो तुम वचन सुधारस पीते, सब उनके वच पालें।
जो तुम आज्ञा पालें भविजन, उन आज्ञा नहिं टालें।।8।।

जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हो।
तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रमुदित हो।।
जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।9।।

मन से भक्ति करें जो भविजन, वे मन निर्मल करते।
वचनों से स्तुति को पढ़कर, वचन सिद्धि को वरते।।
काया से अंजलि प्रणमन कर, तन का रोग नशाते।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके, कर्म कलंक नशाते।।10।।

बहु विध तुम यश आगम वर्णे, श्रवण किया मैं जब से।
तुम चरणों में प्रीति लगी है, शरण लिया मैं तब से।।
प्रभु शांतीश! कृपा ऐसी अब, मुझ पर तुरतहिं कीजे।
सम्यग्ज्ञानमती लक्ष्मी को, देकर निज सम कीजे।।11।।

–दोहा–

शांतिनाथ भगवन् प्रभो, पंचकल्याणक ईश।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, श्रद्धा से नत शीश।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्विताय समवसरण-विभूतिसहिताय श्री शांतिनाथाय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाँजलिः।

–गीता छंद–

जो समवसरण विधान यह, श्री शांति जिनवर का करें।
वे पूर्ण शांती प्राप्त कर, नवलब्धि केवल को धरें।।
संसार भ्रमण समाप्त करके, सिद्धिकन्या वश करें।
सुज्ञानमति रवि किरण से, भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-2

श्री शांतिनाथ गुण पूजा

-अथ स्थापना-शंभु छंद-

श्री शांतिनाथ का समवसरण, गगनांगण में अतिशय सुंदर।
श्रीमण्डपभूमी के आगे, त्रय कटनी हैं दिखतीं मनहर।।
सबसे ऊपर है गंधकुटी, कमलासन पर जिनवर शोभें।
हम उनके गुण की पूजा कर, संसार भ्रमण दुख से छूटें।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक-गीता छंद-

क्षीरोदधी का नीर पय सम, स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्म पंकिल धोवने को, नाथपद धारा करूँ।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिदंबर चित्पुरूष, तीर्थेश के पादाब्ज को।
शुभ गंध से चर्चन करूँ, मुझको सुगुण यश प्राप्त हो।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य चिंतामणि जिनेश्वर, को रिझाऊँ भक्ति से।
उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल, पुंज अर्पूं युक्ति से।।

श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

चंपा चमेली केवड़ा, सुरभित कुसुम अर्पण करूँ।
जिनराज पारसमणि जजत, निज आत्म को कंचन करूँ।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी इमरती रसभरी, मिष्टान्न से भर थाल को।
निज आत्म अमृत स्वाद हेतू, मैं चढ़ाऊँ नाथ को।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती स्वर्ण दीपक, में दिपे सब तम हरे।
निज ज्ञानज्योती हो प्रगट, इस हेतु हम आरति करें।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांगी धूप खेऊँ, धूप घट की अग्नि में।
निज आत्मयश सौरभ उठे, सुख शांति फैले विश्व में।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमृतफल सरस फल, अर्प कर प्रभु पूजते।
स्वात्मैक परमानंद अमृत, प्राप्त हो जिन भक्ति से।।

श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत आदि लेकर, अर्घ भर कर ले लिया।
निज रत्नत्रय निधि लाभ हेतू, नाथ को अर्पण किया।।
श्री शांतिप्रभु के गुण अनंतों, को जजूँ नित भक्ति से।
निज के गुणों को प्राप्त कर लूँ, भक्ति की ही शक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सुवरण झारी में भरूँ, सीता नदि को नीर।
शांतीधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला वकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्रस्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

जिनवर गुणमणि तेज, सर्व लोक में व्यापता।
हो मुझ ज्ञान अशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

–नरेन्द्र छंद–

तीर्थंकर के जन्म काल से, स्वेद न तन में जानो।
मात उदर से जन्में फिर भी, जन्म अपूरब मानो।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के निर्मल तन में, मल-मूत्रादि न होवें।
प्रभु के गुण का नाम मंत्र भी, भव भव का मल धोवे।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं निर्मलतासहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के जन्म समय से, तन में रुधिर नहीं है।
दुग्ध सदृश है धवल रुधिर जो, अतिशय सहज सही है।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमधवलरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन की सुन्दर आकृति, समचतुरस्र बखानी।
नामकर्म ब्रह्मा ने सचमुच, अनुपम रचना ठानी।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभनाराच संहनन, उत्तम प्रभु का जानो।
परम पुण्यमय अद्भुत तन को, गुण गाकर भव हानो।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुन्दर रूप मनोहर, उपमारहित सुहाता।
इन्द्र हजार नेत्र कर निरखे, तो भी तृप्ति न पाता।।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के अनुपम तन में, अति सौगंध्य सुहावे।
इस गुण का अर्चन करके जन, यश सुरभी महकावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं सौगंध्यसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ लक्षण शुभ, प्रभु के तन में भासें।
एक एक लक्षण की पूजा, जिन लक्षण परकाशे।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य तीर्थंकर तन का, तुलना नहीं जगत में।
इस गुण की पूजा करने से, आतम बल हो क्षण में।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अनंतबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रिय हित वचन प्रभू के अनुपम, अमृतसम सुखदायी।
सरस्वती ने मुक्तकंठ से, जिनगुण महिमा गायी।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ जिनगुण गाऊँ।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं निजगुण पाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

प्रभु घाति कर्म का क्षय करते, चउ शत कोसों दुर्भिक्ष टले।
जन-जन सुखकारी हो सुभिक्ष, यह अतिशय होता प्रगट भले।।
मैं वसुविध[1] अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाति चतुष्टय क्षय करके, गगनांगण में ही गमन करें।
वे बीस हजार हाथ ऊँचे, शुभ समवसरण में अधर रहें।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।12।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के शरीर औ गमन आदि से, प्राणीवध नहिं हो सकता।
करुणारत्नाकर स्वामी का यह, अतिशय पूर्ण अभय करता।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि[2] के कवलाहार[3] नहीं, क्षुध आदि अठारह दोष नहीं।
परमानंदामृत आस्वादी, प्रभु के सुख तृप्ती पूर्ण कही।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि जिन के उपसर्ग नहीं, हो सके कदाचित यह जानो।
बस कर्म असाता साता में, संक्रमण करे यह सरधानो।।

---

1. आठ प्रकार के द्रव्य से। 2. केवली भगवान। 3. ग्रास रूप भोजन।

मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का मुख एक तरफ रहता, फिर भी चउ दिश में दीख रहा।
यह अतिशय अद्भुत चतुर्मुखी, सब जन-जन का मन मोह रहा।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर हैं, सब जनता के भी ईश्वर हैं।
सौ इंद्रों से वंदित गुरुवर, मुनिगण से वंद्य निरंतर हैं।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर केवलज्ञान प्रगट होते, नहिं छाया पड़ती है तन की।
परमौदारिक शुभ देह कहा, दीप्ती से लाजें रविगण भी।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों की पलकें नहिं झपकें, फिर भी वे अंतर्दृष्टि कहे।
मानों अनिमिष दृग हो करके, करुणा से सब जग देख रहे।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।19।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के नख केश न बढ़ सकते, यह भी इक अतिशय तुम मानो।
बस पूर्ण ज्ञान के होते ही, त्रैकालिक वस्तु प्रगट जानो।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, प्रभु गुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।20।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

प्रभु अतिशय सर्वार्ध मागधी, भाषामय सुखकारी।
सुनने वाले भव्यजनों के, भव भव दुःख परिहारी।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीयाभाषादेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जात विरोधी सभी जीवगण, वैर भाव सब तजते।
मैत्रीभाव धरें आपस में, बड़े प्रेम से रहते।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋतु के फल फूल फलित हों, एक साथ मन मोहें।
संख्यातों योजन तक ऐसा, अतिशय अद्भुत होवे।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण तल सम रत्नमयी हो, पृथ्वी अतिशयकारी।
प्रभु के विहरण हेतु देवगण, रचना करते सारी।।

अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिय बल, शीतल पवन चलाते।
प्रभु विहार अनुकूल वायु से,जन-जन मन सुख पाते।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।25।।

ॐ ह्रीं विहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन परमानंद प्राप्त कर, प्रभु के गुण गाते हैं।
रोग शोक भय संकट दुख को, तुरत भूल जाते हैं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक धूली आदि दूर कर, वायु सुखद बहती है।
प्रभु विहार के समय दूर तक, भूमि स्वच्छ रहती है।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघकुमार करें नित रुचि से, गंधोदक की वृष्टी।
सौधर्मेंद्र करें नित आज्ञा, प्रभुपद में अति भक्ती।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविहार के समय प्रभू के, चरण कमल के तल में।
स्वर्णकमल सौगंधित सुरगण, रचें उसी ही क्षण में।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।29।।

ॐ ह्रीं जिनचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडित-श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली आदिक खेती बहुविध, फल के भार झुकी हैं।
देवोंकृत यह अतिशय सुन्दर, सब जन पूर्ण सुखी हैं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।30।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद्ऋतू सरवर सम स्वच्छ, सुनिर्मल अभ्र सुहाता।
उल्कापात धूम आदी से, रहित प्रभू यश गाता।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।31।।

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी दिशायें निर्मल होतीं, शरद् मेघ सम दिखतीं।
रोगादिक पीड़ाएँ जन को, वहाँ नहीं हो सकतीं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।32।।

ॐ ह्रीं शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भागत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितश्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकाय देवगण सत्वर, आवो आवो आवो।
इंद्राज्ञा से देव बुलाते, आवो प्रभु गुण गावो।।

अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।33।।

ॐ ह्रीं एतैतेतिचतुर्निकायामरपरापराह्वानदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेंद्रों के मस्तक ऊपर, धर्मचक्र चमके हैं।
चार दिशा में दिव्य चक्र ये, किरणों से दमके हैं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, सुरकृत अतिशय ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निज की, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।34।।

ॐ ह्रीं यक्षेंद्रशीशोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

विकसित पुष्पों के गुच्छों से, तरुवर अशोक है शोभ रहा।
रत्नों की अनुपम कांती से, जन-जन के मन को मोह रहा।।
भविजन के मन का शोक हरे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।35।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर द्वारा नभ से बरसाए, ये खिले कुसुम मानों हँसते।
श्री जिनवर का शुभ उज्ज्वल यश, मानों प्रमुदित वर्णन करते।।
भविजन के मन को विकसाता, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।36।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सात शतक औ अट्ठारह, भाषामय जिनवर की वाणी।
जो स्याद्वाद पीयूष भरी, दिव्यध्वनि त्रिभुवन कल्याणी।।
नित भविजन के भवरोग हरे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।37।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षों द्वारा ढोरे जाते, ये चौंसठ चमर बताते हैं।
जो श्रीजिन आश्रय लेते हैं, वे निश्चित ऊपर जाते हैं।।
भविजन को ऊर्ध्वगतीकारी, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।38।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रत्नों से जड़ा हुआ, सिंहासन सुर नर मन मोहे।
प्रभु के तन की कांती से वह, शत गुणित चमकता नित सोहे।।
अनुपम वैभव को प्रगट करे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।39।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन की द्युति ही मानो, भामंडल बन कर प्रगट हुई।
जन उसमें अपने सात भवों, को देख रहे हैं सही सही।।
भविजन वैराग्य बढ़ाने को, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।40।।

ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों की दुंदुभि बाज रही, मानो भविजन आह्वान करे।
आवो आवो हे भव्य जीव, जिनदर्शन कर निज भान करें।।
श्री जिन का गौरव प्रगट करे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये तीन छत्र शशि मंडल सम, उनमें मुक्ता फल लटक रहे।
जिनदेव देव के त्रिभुवन की, प्रभुता को मानो प्रगट कहें।।

भविजन का तीन ताप शामक, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, श्री शांतिनाथ गुणमणिमाली।।42।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नाराच छंद–

तीन लोक तीन काल की समस्त वस्तु को।
एक साथ जानता अनंत ज्ञान विश्व को।।
जो अनंतज्ञान युक्त इंद्र अर्चते जिन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंतज्ञान हेतु मैं।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अरु अलोक के समस्त ही पदार्थ को।
एक साथ देखता अनंत दर्श सर्व को।।
जो अनंत दर्श युक्त इंद्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंत दर्श हेतु मैं।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधहीन जो अनंत सौख्य भोगते सदा।
हो भले अनंतकाल आवते न ह्यां कदा।।
वे अनंत सौख्य युक्त इंद्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंत सौख्य हेतु मैं।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनंतवीर्यवान अंतराय को हने।
तिष्ठते अनंत काल श्रम नहीं कभी उन्हें।।
वे अनंत शक्ति युक्त इंद्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंत वीर्य हेतु मैं।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

दश अतिशय जन्म समय से हों, दश केवलज्ञान उदय से हों।
देवोंकृत चौदह अतिशय हों, चौंतिस अतिशय सब मिलके हों।।
वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे, सु अनंत चतुष्टय चार कहे।
ये छ्यालिस गुण तीर्थंकर के, हम पूजें वांछित सर्व लहें।।47।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अठारह दोष रहित के 18 अर्घ्य

–सोरठा–

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत, कुसुमांजलि से पूजहूँ।।1।।

।।इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–भुजंगप्रयात छंद–

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।
प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फले सौख्य में मैं जजूँ नित उन्हें ही।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को जजूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महादोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।

जजूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम परं स्थान ही को।।3।।

ॐ ह्रीं भयमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा क्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
जजूं आप को क्रोध को मूल नाशें।।4।।

ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिता से अधिक दुःख चिंता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
जजूँ मैं न चिंता कभी हो हृदय मा।।5।।

ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाश कर मूल से सौख्य पावें।।
प्रभो केवली आपको ही जजूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं जरामहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
जजूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।7।।

ॐ ह्रीं रागमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोह सम्राट से सब दुखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।
इसी मोह के नाश हेतू जजूं मैं।
महाध्वांत हर ज्ञानज्योती भजूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें पूजते ये मुझे छोड़ देते।।9।।

ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्तिलक्ष्मी गृहीता।।
जजें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हों।।10।।

ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पसीना न तन में प्रभू आप के हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हो।।
इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को जजूँ मैं बनूं सौख्यभागी।।11।।

ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं ''खेद'' श्रम रंच भी आपको था।।
विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा जजूँ अर्घ से मैं।।12।।

ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामद कहें आठ विध या असंख्ये।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इंद्र वंदें।
जजूँ आपको सर्वमद को विखंडे।।13।।

ॐ ह्रीं मदमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रती दोष से प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।

प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में।
तथापी जगत् हित करो नित जजूं मैं।।14।।

ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जोऽतिविस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।
जजूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।15।।

ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातम दरश पूर्ण को रोक ले ये।।
इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
जजूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू का।।16।।

ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।
तुम्हीं ने पूनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः पूजहूँ तुम चरण नाथ अब मैं।17।।

ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोये।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
जजूँ आपको ये भगे शीघ्र भीता।।18।।

ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

इन दोष अठारह ने जग में, सबको दुख दे दे वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई, इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।

जो इनको जीतें वे 'जिनेन्द्र', सौ इंद्रों से वंदित जग में।
मैं पूजूं उनको अर्घ चढ़ा, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषरहितश्रीशांतिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री गणधर देव का अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

शांतिनाथ के छत्तिस गणधर, चौंसठ ऋद्धि समन्वित।
'चक्रायुध' गणधर उनमें गुरु, सर्व गुणों से मंडित।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकरस्य चक्रायुधप्रमुखषट्त्रिंशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण के मुनियों के 7 अर्घ्य

–स्रग्विणी छंद–

शांति तीर्थेश के पूर्वधर आठ सौ।
चौदहों पूर्वधारी जजूँ भक्ति सों।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य अष्टशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकतालीस हज्जार औ आठ सौ।
साधु शिक्षक उन्हें मैं जजूँ भाव सों।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य एकचत्वारिंशत्सहस्रअष्टशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन हज्जार हैं ज्ञान अवधी धरें।
जो जजें वे स्वयं स्वात्म पुष्टी करें।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य त्रयसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली चार हज्जार तिष्ठें वहाँ।
पूजते प्राप्त हो ऋद्धि सिद्धी यहाँ।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुःसहस्रकेवलिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधारि छै सहस साधू कहें।
रत्नत्रय को धरें आत्म शुद्धी लहें।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य षट्सहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हज्जार विपुलामती ज्ञानि हैं।
चार गति दुःख से कर रहे त्राण हैं।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुस्सहस्रविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादि चौबीस सौ साधु राजें वहाँ।
भव्य भी पूजते पाप नाशें यहाँ।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनीन्द्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुर्विंशतिशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

शांतिनाथ के पास में, ऋषिगण सर्वप्रधान।
सब बासठ सु हजार हैं, नमूँ नमूँ गुणखान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य द्विषष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

समवसरण की आर्यिकाओं का अर्घ्य

–चौबोल छंद–

श्री शांतिनाथ के समवसरण, में साठ हजार तीन सौ हैं।
गणिनी 'हरिषेणा' माता भी, निज गुण से सुर नर मन मोहें।।
ये परमशांति पाने हेतू, निज समतारस को चखती हैं।
इनकी आहारदान पूजा, भक्तों में समरस भरती है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य हरिषेणाप्रमुखषष्टिसहस्रत्रयशतआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन देव का अर्घ्य

–दोहा–

शांतिनाथ के पास में, 'गरुड़' यक्ष निवसंत।
जिनभक्तों का भक्त है, करे विघन घन अंत।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव गरुड़यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शासन देवी का अर्घ्य

–दोहा–

जिनवर की 'महामानसी', शासन देवी मान्य।
पूजूँ अर्घ समर्घ्य मैं, करो शांति जगमान्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(108 गुणों के अर्घ्य)

–दोहा–

शांतिनाथ! गुण आपके, नन्तानन्त प्रमाण।
अष्टोत्तरशत गुण जजूँ, करूँ अनंत प्रणाम।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शालिनी छंद–

'दिग्वासा' हो वस्त्र दिश् ही तुम्हारे। ऐसी मुद्रा हो कभी नाथ मेरी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं दिग्वासस्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सुन्दर 'वातरशना' तुम्हीं हो। धारी वायू करधनी है कटी में।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं वातरशनागुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निर्ग्रंथेश' हो बाह्य अंतः। चौबीसों ही ग्रन्थ में मुक्त मानें।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथेशगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी भूमी पे 'दिगम्बर' तुम्हीं हो। धारा अम्बर दिक्मयी शील पूरे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं दिगम्बरगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' हो नाथ सर्वस्व त्यागा। आत्मानंते सद्गुणों से भरी है।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं निष्किंचनगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा त्यागी हो 'निराशंस' स्वामी। आशा मेरी पूरिये सिद्धि पाऊँ।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं निराशंसगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी ज्ञान ही नेत्र पाया। स्वामी मेरे 'ज्ञानचक्षू' तुम्हीं हो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुष्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा मोहारी 'अमोमुह' कहाये। स्वामी मेरे मोह रागादि नाशो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अमोमुहगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशी' तेज के पुंज स्वामी। चंदा से भी सौम्य शीतल भये हो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं तेजोराशिगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंते ओजस्वी 'अनंतौज' स्वामी। मेरी शक्ति को बढ़ा दो सभी ही।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अनंतौजस्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'ज्ञानाब्धी' ज्ञान के सिंधु स्वामी। स्वामी मेरे ज्ञान को पूर्ण कीजे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धिगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलों से भृत 'शीलसागर' तुम्हीं हो। अठरा साहस्र शील को पूरिये भी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं शीलसागरगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' हो नाथ! तेजः स्वरूपी। आत्मा तेजोरूप मेरी करो भी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं तेजोमयगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योती' आप ज्योति अनंती। मेरी आत्मा ज्योति से पूर दीजे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं अमितज्योतिष्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ती' ज्योतिमय देह धारा। मेरे घट में ज्ञान ज्योती भरीजे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तिगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारी हन के 'तमोपह' तुम्हीं हो। मेरे चित्त का सर्व अज्ञान नाशो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।16।।
ॐ ह्रीं तमोपहगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल 'जगच्चूड़ामणी' आप ही हो। तीनों लोकों के शिखारत्न स्वामी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।17।।
ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणिगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा 'दीप्त' स्वामी तुम्हीं हो। मेरी आत्मा दीप्त कीजे गुणों से।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।18।।
ॐ ह्रीं दीप्तगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवान्' स्वामी सौख्य शांती तुम्हीं में। मेरी आत्मा सौख्य से पूर्ण कीजे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।19।।
ॐ ह्रीं शंवत्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी मेरे 'विघ्नवीनायका' हो। मेरे विघ्नों को हरो नाथ! जल्दी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को।दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।20।।
ॐ ह्रीं विघ्नविनायकगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में 'कलिघ्ना' तुम्हीं हो। मेरे कलिमल नाश के सौख्य दीजे।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।21।।
ॐ ह्रीं कलिघ्नगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे स्वामी 'कर्मशत्रुघ्न' ही हो। दुष्कर्मों को नष्ट कीजे प्रभू जी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।22।।
ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'लोकालोक प्रकाशक' जिनेशा। देखा तीनों लोक अलोक भी तो।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।23।।
ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जागे आत्मा में 'अनिद्रालु' स्वामी। मेरी आत्म मोह निद्रा तजे भी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।24।।
ॐ ह्रीं अनिद्रालुगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस नाशा हो 'अतन्द्रालु' स्वामी। मेरी आत्मा ज्ञान से स्वस्थ होवे।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ आप गुण को। दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।25।।
ॐ ह्रीं अतन्द्रालुगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–लोल तरंग छंद–

जाग्रत संतत 'जागरूक' हो। मोह कि नींद हरो तुम ध्याऊँ।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।26।।
ॐ ह्रीं जागरूकगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो। ज्ञान गुणाधिक हो मुझ आत्मा।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।27।।
ॐ ह्रीं प्रमामयगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! 'लक्ष्मीपति' जग में हो। नंत चतुष्टय श्रीपति जिन हो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।28।।
ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतिगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगज्ज्योती' कहलाये। ज्योति भरो तम को हर लीजे।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।29।।
ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिष्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दयापति 'धर्मराज' हो। नाथ हृदे मुझ धर्म विराजे।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।30।।
ॐ ह्रीं धर्मराजगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' सर्व प्रजा की। पालन रीति नृपाल सिखायी।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।31।।
ॐ ह्रीं प्रजाहितगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मुमुक्षु' कहें मुनि ज्ञानी। इच्छुक कर्म अरी सब छूटें।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।32।।
ॐ ह्रीं मुमुक्षुगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंधमोक्षज्ञा' हो तुम स्वामी। जानत बंध रु मोक्ष विधी को।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।33।।
ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जिताक्ष' जिता पण इंद्री। जीत सकें विषयों को हम भी।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।34।।
ॐ ह्रीं जिताक्षगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जितमन्मथ' काम विजेता। काम अरी मुझ मार भगावो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।35।।
ॐ ह्रीं जितमन्मथगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशांतरसशैलुष' हो। किया प्रदर्शन शांति रसों का।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।36।।
ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषगुणविभूषितायश्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यनपेटकनायक' मानें। भव्य समूह कहें तुम स्वामी।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।37।।
ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रधान कहा युग आदी। 'मूलसुकर्ता' आप बखाने।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।38।।
ॐ ह्रीं मूलकर्तृगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदारथ पूर्ण प्रकाशा। नाथ! 'अखिलज्योती' सुर गाते।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।39।।
ॐ ह्रीं अखिलज्योतिष्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मलघ्न' सभी मल हाने। सर्व अघों मल नाश करो मे।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।40।।
ॐ ह्रीं मलघ्नगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूलसुकारण' मुक्ति सुपथ के। नाथ! मुझे शिवमार्ग दिखा दो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।41।।
ॐ ह्रीं मूलकारणगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आप्त' यथारथ देव तुम्हीं हो। नाथ! तपोनिधि दो सुखदाता।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।42।।
ॐ ह्रीं आप्तगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वागीश्वर' दिव्यधुनी के। लोल तरंग वचोऽमृत गंगा।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।43।।
ॐ ह्रीं वागीश्वरगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रेयान्' प्रभो! श्रिय दाता। अंतर बाहिर श्री मुझको दो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।44।।
ॐ ह्रीं श्रेयस्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रायसउक्ति' हितंकर वाणी। नाथ! मुझे निज रत्नत्रयी दो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।45।।
ॐ ह्रीं श्रायसोक्तिगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थकवाच 'निरुक्तवाक्' हो। आप धुनी मन शांति करेगी।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।46।।
ॐ ह्रीं निरुक्तवाक्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रवक्ता' श्रेष्ठ वचों से। धर्मसुधा बरसा जन तोषा।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।47।।
ॐ ह्रीं प्रवक्तृगुणविभूषिताय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'वचसामिश' मानें। धर्म वचन के ईश्वर ही हो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।48।।
ॐ ह्रीं वचसामीशगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मारजीता' प्रभु कामजयी हो। सर्व मनोरथ पूर्ण करो जी।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।49।।
ॐ ह्रीं मारजित्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वभाववित्' तीन जगत् को। जान लिया मुझ ज्ञान सुधा दो।।
आप सुमंत्र जपूँ मन लाके। आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।50।।

ॐ ह्रीं विश्वभावविद्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–त्रिभंगी छंद–

हे नाथ 'सुतनु' हो, उत्तमतनु हो, अतिशय दीप्ती, धारत हो।
हन आधी व्याधी, मेट उपाधी, पूर्ण निरामयकारक हो।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।51।।

ॐ ह्रीं सुतनुगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु देहरहित हो, ज्ञानदेह हो, 'तनुनिर्मुक्त' कहाते हो।
तनु बंधन काटूं, अघ अरि पाटूं, भवितनुमल, को नाशे हो।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।52।।

ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्तगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' तुम्हीं हो, अधर गमन हो, आत्मरूप में लीन रहे।
मुझ सुगति करोगे, सौख्य भरोगे, दो शक्ती शिवमार्ग लहें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।53।।

ॐ ह्रीं सुगतगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु'हतदुर्नय' हो, स्वयं सुनय हो, मिथ्यानय को दूर किया।
जो नहिं निरपेक्षी, नित सापेक्षी, सम्यकनय का कथन किया।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।54।।

ॐ ह्रीं हतदुर्नयगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'श्रीश' हो, मुक्ति ईश हो, अंतर बाहिर लक्ष्मी से।
श्री आदि देवियां, मात सेविया, तुम महिमा सुर भक्ती से।।

गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।55।।

ॐ ह्रीं श्रीशगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री-लक्ष्मी सेवित, चरणकमलयुग, प्रभु 'श्रीश्रितपादाब्ज' तुम्हीं।
धन लक्ष्मी इच्छुक, भविजन अर्चत, सभी सौख्य श्री देत तुम्हीं।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।56।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'वीतभी', प्राप्त अभयधी, भविजन को निर्भीक करो।
हत जन्म मरण भय, शिवपद निर्भय, देकर मुझभय शीघ्र हरो।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।57।।

ॐ ह्रीं वीतभीगुणमंडिताय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन 'अभयंकर' जग क्षेमंकर, भव्य हितंकर आप कहे।
मेरे दुख टारो, भव निरवारो, मुझ आत्मा निज सौख्य लहे।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।58।।

ॐ ह्रीं अभयंकरगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नदोष' हो, रत्नकोश हो, सब दोषों को दूर किया।
मुझ दोष दूर हों, सौख्य पूर हो, इस आशा से शरण लिया।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।59।।

ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विघ्न विरहिते, मंगल सहिते, कर्म हते, निर्विघ्न भये।
मुझ शिवमारग में, दिन प्रतिदिन में, विघन घने, तुम जजत गये।।

गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।60।।
ॐ ह्रीं निर्विघ्नगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतिशय सुस्थिर, ज्ञान चराचर, मुनिगण 'निश्चल' तुमहिं कहें।
मुझ चित्त विमल हो, ध्यान अचल हो, पद भी निश्चल, शीघ्र लहें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।61।।
ॐ ह्रीं निश्चलगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमपद प्रीती, सुद्गुण नीती, हरत अनीती, प्रेम भरे।
तुम 'लोकसुवत्सल', हरत करममल, भरत महाबल, नेह धरें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।62।।
ॐ ह्रीं लोकवत्सलगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'लोकोत्तर' सर्व अनुत्तर, नमत सुरासुर, भविक भजें।
जो तुम पद ध्यावें, निज सुख पावें, कर्म नशावें, सुगुण सजें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।63।।
ॐ ह्रीं लोकोत्तरगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपपी, त्रिजग अधिप हो, भवि रक्षक हो, त्रिभुवन में।
अतिशय सुखदाता, हरत असाता, मोक्ष विधाता, मुनिगण में।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।64।।
ॐ ह्रीं लोकपतिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भविक नयन हो, 'लोकचक्षु' हो, जगत लखत हो, प्रतिक्षण में।
मुझ ज्ञाननेत्र दो, भ्रम तमहर दो, निज रुचि भर दो, रग रग में।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।65।।
ॐ ह्रीं लोकचक्षुष्गुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'अपारधी', अनवधिबुद्धी, हरत कुबुद्धी, ज्ञानमयी।
मुझ कुमति हटा दो, सुमति बढ़ा दो, मोह मिटा दो, दुःखमयी।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।66।।
ॐ ह्रीं अपारधीगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीरधी' सुस्थिर बुद्धी, अतुलित बुद्धी, महामना।
मुझ ज्ञान विमल हो, सौख्य अमल हो, जन्म सफल हो, धर्मघना।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।67।।
ॐ ह्रीं धीरधीगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भवदधि पारग, भवि शिवमारग, आप 'बुद्धसन्मार्ग' कहे।
पथ स्वयं चले हो, कहत भले हो, तुमसे ही, जन मार्ग लहें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।68।।
ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'शुद्ध' हो, स्वात्मसिद्ध हो, भविजन शुद्ध, बनेंतुमसे।
मुझ कलिमल नाशो, आत्म प्रकाशो, मन में भासो, नमुं रुचि से।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।69।।
ॐ ह्रीं शुद्धगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सत्यपवित्रा, वचन धरित्रा, 'सत्यासूनृतवाक्' तुम्हीं।
तुम वचन औषधी, सर्व औषधी, मेटत जामन मरण मही।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।70।।
ॐ ह्रीं सत्यसूनृतवाक्गुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु चरमसीम पे, बुद्धी पहुँचे, 'प्रज्ञापारमिता' तुम हो।
मुझ ज्ञान अल्पश्रुत, बने पूर्ण श्रुत, ज्ञान ध्यान शिवकारक हो।।

गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।71।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमितगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राज्ञ' कहाये, मोह नशाये, सुरगण गायें, गुण नित ही।
मुझ विद्यादाता, दो सुखसाता, हरो असाता, हो सुख ही।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।72।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विषय विरत हो, स्वात्म निरत हो, महाव्रतिक हो, 'यति' तुमही।
इंद्रिय विषयन को, कषाय गण को, दूर करो जो, दुखद मही।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।73।।

ॐ ह्रीं यतिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु!'नियमितइंद्रिय' जित पण इंद्रिय, जीत लिया हिय, जिन तुमही।
मुझ इंद्रिय मन की, जीतन शक्ती, दीजे युक्ती, नमित मही।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।74।।

ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

भगवन् ! 'भदंत' तुम, पूज्य कहें मुनि, सुरनर यतिगण, तुम वेंद्य
हम तज बहिरात्मा, अंतर आत्मा, हों परमात्मा गुण मंडें।।
गुण नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।75।।

ॐ ह्रीं भदंतगुणविभूषिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पृथ्वी छंद–

प्रभो! तुमहिं 'भद्रकृत्' सकल लोक कल्याणकृत्।
नमूँ अतुल भक्ति से त्वरित सौख्य दीजे मुझे।।

जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।76।।

ॐ ह्रीं भद्रकृत्गुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'भद्र' हो सकल जीव श्रेयस् करो।
अमंगल हरो सदा अखिल विश्व मंगल करो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।77।।

ॐ ह्रीं भद्रगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'कल्पवृक्ष' मन चाहि वांछा भरो।
अतः सकल भव्यजीत नित भक्ति से पूजते।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।78।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरप्रद' जिनेशा एक वरदान दे दीजिये।
मिले तुरत सिद्धिधाम बस और ना चाहिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।79।।

ॐ ह्रीं वरप्रदगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! यम नाश के 'समुन्मूलिकर्मारि' हो।
उखाड़ जड़मूल से करम शत्रु नाशा तुम्हीं।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।80।।

ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जिनेन्द्र! तुम 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' लोक में।
समस्त अठ कर्म इंधन जलावते अग्नि हो।।

जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।81।।

ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त शिव कार्य में निपुण आप 'कर्मण्य' हो।
प्रभो! निमित्त आप पाय सब कार्य मेरे बनें।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।82।।

ॐ ह्रीं कर्मण्यगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त कर्मारि के हनन में सुसामर्थ्य है।
अतेव 'कर्मठ' तुम्हीं सकल कार्य में दक्ष हो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।83।।

ॐ ह्रीं कर्मठगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समर्थ प्रभु आप ही सतत 'प्रांशु' सर्वोच्च भी।
समस्त अघ नाश के सकल सौख्य संपद् भरो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।84।।

ॐ ह्रीं प्रांशुगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! बस आप 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
हिताहित विचारशील तुम सा नहीं अन्य है।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।85।।

ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त जग जानते प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं।
अनंत गुण पूरिये हृदय में सदा राजिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।86।।

ॐ ह्रीं अनंतशक्तिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न छिन्न भिन्न हों कभी प्रभु सदैव 'अच्छेद्य' हो।
मुझे स्व पर ज्ञान हो स्वयम् ही स्वयंभू बनूँ।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।87।।

ॐ ह्रीं अच्छेद्यगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्रिपुरारि' हो त्रिविध कर्म को नाशके।
जरा जनम मृत्यु तीन पुर नाश कीने तुम्हीं।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।88।।

ॐ ह्रीं त्रिपुरारिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोचन' त्रिकालवर्ति सब वस्तु को देखते।
जिनेन्द्र! श्रुतज्ञान से विमल स्वात्म चिंतन करूँ।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।89।।

ॐ ह्रीं त्रिलोचनगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिनेत्र' तुम जन्म से मति श्रुतावधी ज्ञानि थे।
पुनः त्रिजग देख के सकल ज्ञानधारी भये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।90।।

ॐ ह्रीं त्रिनेत्रगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक पितु आप 'त्र्यंबक' कहें मुनीनाथ भी।
मुझे भी प्रभु पालिये निजगुणादि से पूरिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।91।।

ॐ ह्रीं त्र्यंबकगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्र्यक्ष' हो सतत रत्नत्रैरूप हो।
मुझे भि त्रय रत्न दो सकल लोक स्वामी बनूँ।।

जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।92।।

ॐ ह्रीं त्र्यक्षगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वघाति चउ नाश 'केवलज्ञानवीक्षण' बनें।
विघात घन घाति मैं सकल ज्ञान पाऊँ प्रभो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।93।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'समंतभद्र' सब ओर मंगलमयी।
अमंगल हरो सभी भुवन में सुमंगल करो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।94।।

ॐ ह्रीं समंतभद्रगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! सकल शत्रु शांतकर आप 'शांतारि' हो।
मुझे करम शत्रु शांतकर शक्ति दे दीजिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।95।।

ॐ ह्रीं शांतारिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधर्म संस्थाप के तुमहि, 'धर्म आचार्य' हो।
प्रभो सकल विश्व में सदय[1] धर्मनेता तुम्हीं।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।96।।

ॐ ह्रीं धर्माचार्यगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयानिधि' तुम्हीं सभी जन दया के भंडार हो।
दयालु मुझपे दया अब करो दुखी जान के।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।97।।

ॐ ह्रीं दयानिधिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दया सहित

पदार्थ सब सूक्ष्म भी लखत 'सूक्ष्मदर्शी' प्रभो।
मुझे अतुल शक्ति दो सकल लोक आलोक[1] लूँ।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।98।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वकाम अरि जीत के प्रभु तुम्हीं 'जितानंग' हो।
अभीप्सित सुपूरिये विषय काम को नाश के।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।99।।

ॐ ह्रीं जितानंगगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृपालु' करके कृपा सकल पाप को नाशिये।
अनंत सुख दीजिये भुवन शीश पे थापिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।100।।

ॐ ह्रीं कृपालुगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! भुवि 'धर्मदेशक' तुम्हीं सुधर्माब्धि हो।
मुझे स्वपर भेदज्ञानमय धर्म दीजे अबे।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।101।।

ॐ ह्रीं धर्मदेशकगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंयु' शुभ युक्त हो प्रभु सुखामृताम्भोधि हो।
मुझे शुभमयी करो तुरत शुद्ध आत्मा बने।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।102।।

ॐ ह्रीं शुभंयुगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'सुखसाद्भूत' अनुपं सुखाधीन हो।
अनंत सुख दो मुझे गुणसमूह से पूर्ण जो।।

1. देख लूँ।

जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।103।।

ॐ ह्रीं सुखसाद्भूतगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! तुम 'पुण्यराशि' शुभ पुण्य भंडार हो।
पवित्र निज को किया मुझ पवित्र आत्मा करो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।104।।

ॐ ह्रीं पुण्यराशिगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनामय' प्रभो! तुम्हें सकल व्याधि पीड़ा नहीं।
समस्त तनु रोग नाश भव व्याधि मेरी हरो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।105।।

ॐ ह्रीं अनामयगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'धर्मपाल' जिन धर्म को रक्षते।
अनंत जिनधर्म हे हृदय में विराजो सदा।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।106।।

ॐ ह्रीं धर्मपालगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'जगत्पाल' हो भुवन प्राणि को रक्षते।
मुझे सतत रक्षिये जगपते! मनोरक्ष हो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।107।।

ॐ ह्रीं जगत्पालगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! जगमध्य 'धर्मसाम्राज्यनायक' तुम्हीं।
सुमोक्षप्रद सार्वभौम जिनधर्म के ईश हो।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।108।।

ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकगुप्तांडिताय श्रीशांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

दिग्वासादिक नाम एक सौ, आठ आपके सुरपति गाते।
नाममंत्र को मन में ध्याकर, योगीजन निज संपति पाते।।
मैं भी प्रतिक्षण नाममंत्र को, हृदय कमल में धारण कर लूँ।
प्रभु ऐसी दो शक्ती मुझको, तुम भक्ती से भवदधि तर लूँ।।10।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिसहिताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

स्वात्म सुधारस सौख्यप्रद, परमाह्लाद करंत।
गाऊँ जिनगुणमालिका, हो मुझ शांति अनंत।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व तीर्थेश को।
सर्व जिनबिंब युत सर्व जिनगेह को।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

जिन समोसर्ण में सर्व मन मोहती।
चैत्यप्रासाद भू चौतरफ शोभती।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

चउदिशी वीथि में नाट्यशाला बनी।
दो तरफ दोय दो नृत्य से सोहनी।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

एक इक में बतीसों हि रंगभूमियाँ।
एक इक में बतीसों भवन देवियाँ।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

नृत्य करती हुई नाथ गुण गावतीं।
पुष्प अंजलि बिखेरंत मन भावतीं।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

एक इक जिनभवन शिखर से तुंग हैं।
उन सभी बीच सुरमहल पण पंच हैं।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

देवघर बावड़ी उपवनों युक्त हैं।
देव क्रीड़ा करें नाथ पद भक्त हैं।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।8।।

दोय दो धूप घट दो तरफ शोभते।
धूप खेवें सभी पाप मल धोवते।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।9।।

धन्य यह शुभ घड़ी धन्य है धन्य है।
धन्य मेरा जनम आप पद वंद्य है।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।10।।

आप पद पूजतें सर्व विपदा टलें।
सर्व इच्छित फलें सर्व संपत् मिले।।

नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।11।।

–दोहा–

भक्तों के वत्सल तुम्हीं, करुणासिंधु जिनेश।
'ज्ञानमती' कैवल्य हो, फेर न मांगूं लेश।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति द्वादशकामदेवपदसमन्वित समवसरण-विभूतिसहिताय श्री शांतिनाथाय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाँजलिः।

–गीता छंद–

जो समवसरण विधान यह, श्री शांति जिनवर का करें।
वे पूर्ण शांती प्राप्त कर, नवलब्धि केवल को धरें।।
संसार भ्रमण समाप्त करके, सिद्धिकन्या वश करें।
सुज्ञानमति रवि किरण से, भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–स्रग्विणी छंद–

जय जयो नाथ आर्हन्त्य लक्ष्मी धरें।
जय जयो नाथ आनन्त्य गुणमणि भरें।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।1।।

जय जयो नाथ कैवल्य ज्ञानी तुम्हीं।
जय जयो नाथ त्रैलोक्य दर्शी तुम्हीं।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।2।।

आप उपदेश हित इंद्र मंडप रचें।
जो समोसरण इस नाम से बहु दिपे।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।3।।

आठ हैं भूमि घेरें वहाँ चउ तरफ।
पुष्पफल की लताभी वहाँ सब तरफ।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।4।।

गोल चउकोण त्रयकोण की वापियां।
स्वच्छ जल से भरीं पुष्प हँसते वहां।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।5।।

तुंग पर्वत बहुत सीढ़ियों युत बने।
देव देवी मनुजगण उन्हीं पर रमें।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।6।।

नाथ वैभव तुम्हारा न उपमा कहीं।
धनद ने सर्वभंडार खोला यहीं।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।7।।

मैं बड़े पुण्य से नाथ पायो तुम्हें।
धन्य है धन्य है या घड़ी धन्य मैं।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।8।।

श्री समोसर्ण में आठवीं भूमि में।
सोलहों भित्ति से कोष्ठ बारह बने।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।9।।

सामने कोष्ठ में गणधरा मुनिवरा।
नाथ ध्वनि सुन रहें जो महासुखकरा।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।10।।

दूसरे कोष्ठ में कल्प की देवियाँ।
तीसरे आर्यिका श्राविकायें वहां।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।11।।

ज्योतिषी व्यंतरी फिर भवनवासियां।
भौन सुर व्यंतरा ज्योतिषी सुर वहां।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।12।।

ये सभी क्रम से फिर देव हैं स्वर्ग के।
ग्यारमें चक्रवर्ती मनुज बैठते।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।13।।

बारवें सिंह हरिणादि हैं प्रेम से।
इस तरह बारहों गण सभा नेम से।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।14।।

देव देवी असंख्यों वहां बैठते।
नर पशू सर्व बाधा बिना तिष्ठते।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।15।।

नाथ की दिव्यध्वनि तीन संध्या खिरे।
एक योजन तके सब सुनें रुचि धरे।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।16।।

प्रभु समोसर्ण में रोग शोकादि ना।
भूख प्यासादि बाधा जनम मृत्यु ना।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।17।।

वैर उत्पात आतंक भीती नहीं।
सर्वथा हर्ष ही हर्ष सुख की मही।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।18।।

धन्य मैं धन्य मैं अर्चना कर रहा।
धन्य ये जन्म मेरा सफल हो रहा।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।19।।

आत्म पीयूष निर्झर पिऊँ प्रेम से।
''ज्ञानमति'' पूर्ण हो एक ही क्षेम से।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।20।।

-दोहा-

सोलहवें तीर्थेश प्रभु, पंचम चक्री ईश।
कामदेव द्वादशम प्रभू, नमूँ नमूँ नत शीश।।21।।

ॐ ह्रीं षोडशतीर्थंकरपंचमचक्रवर्ति-द्वादशकामदेवपदसमन्वितश्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो समवसरण विधान यह, श्री शांति जिनवर का करें।
वे पूर्ण शांति प्राप्त कर, नवलब्धि केवल को धरें।।
संसार भ्रमण समाप्त करके, सिद्धिकन्या वश करें।
सुज्ञानमति रवि किरण से, भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री शांतिनाथ समवसरण विधान

प्रशस्तिः

-अनुष्टुप् छंद-

षोडशं तीर्थकर्तारं, पंचमं चक्रवर्तिनम्।
द्वादशं कामदेवं च, शांतिनाथं नमाम्यहम्।।1।।

जम्बूद्वीपेऽत्र क्षेत्रे प्राग्, भरतेऽप्यार्यखण्डके।
श्रीवीरशासने सूरिः, कुंदकुंदगुरुर्महान्।।2।।

मूलसंघे च तन्नाम्ना, कुंदकुंदान्वयोऽभवत्।
गच्छे सरस्वतीनाम्नि, बलात्कारगणे शुभे।।3।।

अस्मिन् विंशशताब्दौ यः, प्रथमाचार्य इष्यते।
चारित्रचक्रवर्ती च, गुरुः श्री शांतिसागरः।।4।।

श्रीवीरसागराचार्यस्तस्य, पट्टाधिपोऽभवत्।
तस्य ज्ञानमती शिष्या-ऽहं, गणिन्यार्यिकाऽभवम्।।5।।

नवत्रिपंचद्वयंकेऽस्मिन् वीराब्दे दशमी तिथौ।
पौषे सिते विधानं हि, ज्ञानतिथौ प्रपूर्यते[1]।।6।।

शांतिनाथसमवादि-सृतिपूजा[2] कृता मया।
भक्तिभावेन कर्तव्या भव्यैश्चात्मगुणार्थिभिः।।7।।

यावत् श्रीशांतिनाथस्य, जन्मभूर्हस्तिनापुरी।
गणिनी ज्ञानमत्येयं रचना नंद्यतां भुवि।।8।।

जम्बूद्वीपः सुमेरुश्च, त्रयोदशजिनालयः।
त्रैलोक्यरचना तावद्, यावज्जैनेन्द्रशासनम्।।9।।

।।इति शं भूयात्।।

1. श्री शांतिनाथ की केवलज्ञानकल्याणक तिथि है। 2. श्री शांतिनाथ समवसरणविधान

समवसरण की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

श्री शांतिनाथ के समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टि जिनको लखकर पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभु जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभु जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगण युत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टि राजें।।प्रभु जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव से, शोभ रहें भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही ''चन्दनामती'' कष्ट टलते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु शान्तिनाथ के समवसरण की महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

भगवान श्री शांतिनाथ की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ सोलहवें जिन की आरति करो रे।।टेक.।।

प्रभु आरति से सब जन का, मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है,
भव-भव के कल्मष धुलकर, सम्यक्त्व उजाला आता है,
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।1।।

प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर, नरकों में भी शांति मिली।
ऐरादेवी के आंगन में, आनंद की इक लहर चली।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
जय विश्वसेन के प्रिय नन्दन की आरति करो रे।।श्री शांति...।।2।।

शांतिनाथ निज चक्ररत्न से, षट्खंडाधिपती बने।
इस वैभव में शांति न लखकर, रत्नत्रय के धनी बने।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ पंचम चक्री की आरति करो रे।।श्री शांति....।।3।।

जो प्रभु के दरबार में आता, इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर, 'चंदनामती' शिव पाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मुक्ति श्री के अधिनायक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।4।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई.....

समवसरण आया अभिनन्दन कर लो,
वंदन कर लो, अभिनन्दन कर लो।
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।। टेक.।।

केवलज्ञानी तीर्थंकर विहरण करें,
चरण कमल तल इन्द्र कमल स्वर्णिम धरें।
उन पर भी चतुरंगुल प्रभू अधर चलें,
वीतरागता उनकी सदा अमर रहे।।
दर्शन करो, वंदन करो,
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।1।।

जिनवर की उपदेश सभा जो दिव्य है,
समवसरण उसको ही कहते भव्य हैं।
आज नहीं साक्षात् हमें वे दिख रहे,
उनकी प्रतीकृती की हम रचना करें।।
दर्शन करो, वंदन करो,
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।2।।

मिथ्यात्वी का मान भंग हो दर्श से,
सम्यग्दर्शन प्रगटित करते हर्ष से।
मानव क्या पशु भी तज देते वैर को,
समवसरण 'चंदना' दिखावे दृश्य वो।।
दर्शन करो, वंदन करो,
वह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।3।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–बहुत प्यार करते हैं हम.....

शांतिनाथ प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2 हैं भक्ती सुमन।। शांतिनाथ.....।। टेक.।।

माँ ऐरादेवी के घर, रत्न खूब बरसे।
हस्तिनापुरी में पिता, विश्वसेन हरषे।।
ज्येष्ठ वदी चौदश को-2, हुआ प्रभु जनम।। शांतिनाथ.....।।1।।

चक्रवर्ती पाँचवें वे, शांतिनाथ स्वामी हैं।
कामदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।।
हस्तिनापुरी की धरती-2, हुई धन्य धन।। शांतिनाथ.....।।2।।

राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बनकर के जिनवर राजे, समवसरण में।।
'चंदना' हुए वे अपने-2, आप में मगन।। शांतिनाथ.....।।3।।